नई सवारी

चकमक में प्रकाशित कविताओं का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

नई सवारी

NAI SAWARI

चकमक में प्रकाशित कविताओं का संकलन

आवरण चित्र: रजनी, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

इस पुस्तिका में संकलित कविताएँ चकमक के विभिन्न अंकों से ली गई हैं। कविताओं तथा चित्रों के पुनः प्रकाशन के लिए लेखकों तथा चित्रकारों के सौजन्य के हम आभारी हैं।

प्रथम संस्करणः मार्च 2000/10000 प्रतियाँ
प्रथम पुनर्मुद्रणः मई 2007/5000 प्रतियाँ
द्वितीय पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2008/5000 प्रतियाँ
80 **gsm** मेपलिथो पर प्रकाशित
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

ISBN: 81-87171-30-8
मूल्यः 5.00 रुपए

प्रकाशकः एकलव्य
ई-10 बी डी ए कॉलोनी, शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः 0755-255 0976, 267 1017, 255 1109
फैक्सः 0755-255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः श्रेया ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन (0755) 427 5001

चंदा मामा

सबने देखा एक अचंभा
मछुआरे ने जाल समेटा
कहीं नहीं थे चंदा मामा
कहाँ गए जी चंदा मामा?

ताल में गिर गए चंदा मामा
सबने देखा, सबने देखा
जाल में फँस गए चंदा मामा
सबने देखा सबने देखा।

मछुआरे की मति चकराई
झाँक झरोखे बोली ताई
पानी में जो दिखती बुद्धू
वो तो चंदा की परछाईं।

● राजेश जोशी
● चित्र : आशा शर्मा

(मई ८८)

सपने क्यों हैं आते!

मम्मी सपने क्यों हैं आते
कभी रुलाते कभी हँसाते।

प्यारी दादी घर जब आती
ढेर खिलौने भरकर लाती

कुछ खो जाते, कुछ रह जाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते।

परियों के जब देश घूमता
रंग बिरंगे फूल-चूमता

भँवरे मुझे देख मुस्काते
मम्मी सपने क्यों हैं आते।

चाँद सितारे जुगनू सारे
देखो लगते कितने प्यारे

यह सब मेरा मन बहलाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते।

सपनों का वह देश सुहाना
मम्मी सुनो, मुझे भी जाना

मधुर मिलन का गीत सुनाते
मम्मी सपने क्यों हैं आते।

● कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

● चित्र : हिमांशु

(जनवरी 94)

साँझ

किरणों की पगड़ी बाँधे,
चले साँझ को सूरज भइया।
दूर कहीं पश्चिम में स्थित,
अपने घर को लाद गठरिया।

मैं बोला– खोल गठरिया,
ज़रा हमें भी दिखलाओ।
अच्छे भइया, प्यारे भइया,
हमसे न इसे छिपाओ।

ना, ना करते सूरज भइया,
चढ़ गए मकान की छत पर।
बिगड़ गया संतुलन, बेचारे
पिछवाड़े गिर पड़े फिसलकर।

खुली पोटली रंग सिंदूरी,
बिखर गया सारा का सारा।
सिंदूरी आकाश हो गया,
वाह, भई वाह! क्या खूब नज़ारा!

● अशोक अंजुम
● चित्र : विवेक

(सितंबर 89)

हैंड पम्प पर शेर

हैंड पम्प पर खड़ा हुआ था
एक सुनहरा शेर!
मारे प्यास के
सिकुड़ गया था
उसका लम्बा पेट!

वहाँ पे आया टिड्डा ज्यों ही
दिखा वो प्यारा शेर
दिया जो धक्का
पम्प से निकला
पानी तीनेक सेर!

पिया जो पानी मोटा हो गया
उसका लम्बा पेट
फिर भी यारो
टिड्डे के संग
उड़ा सुनहरा शेर।

● सुबीर शुक्ला
● चित्र : जया

(फरवरी 90)

बिल्ली चली हज

बिल्ली चली हज
चूहा बना जज

बोला बिल्ली रानी
होती है हैरानी
सौ-सौ चूहे खाकर
कहती गाल बजाकर

चूहे दिए तज
बिल्ली चली हज

मुँह में राम, बगल में छुरी
चोरी, ऊपर सीनाजोरी
तुमको सूली चढ़वाऊँगा
गले में घंटी लटकाऊँगा

घुँघरू जाएँ बज
बिल्ली चली हज

चुपके दूध न पी पाओगी
घुँघरू बजें जहाँ जाओगी
मुँह में नहीं, पेट में चूहे
भूख लगे तो कूदें चूहे

राम नाम भज
बिल्ली चली हज

(सितम्बर 85)

● रमेशदत्त दुबे

कुहू-कुहू, काँव-काँव

कोयल काली कौवा काला
दोनों के तो रंग एक हैं
फुदक-फुदककर उड़ते रहते
दोनों के तो ढंग एक हैं

सूरत से ही उनकी हुलिया
कभी नहीं जाती पहचानी
भेद नहीं खुलने पाता है
देख-देख होती हैरानी

किन्तु बोलते हैं जब दोनों
मिट जाता है भ्रम का हौवा
कुहू-कुहू करती है कोयल
काँव-काँव करता है कौवा

● राजा चौरसिया

● चित्र : ज्योति भटेवरा, अपूर्वा दुबे

(मार्च 86)
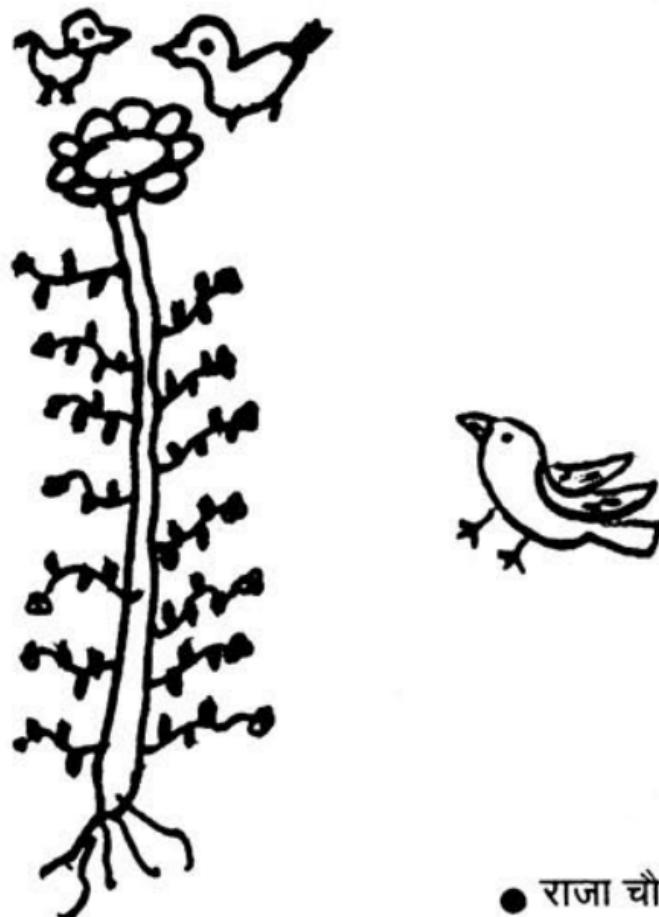
बादल
तुम भी क्या अजूबा हो!

सुबह-सुबह जब आँख खुले
ताज़ी हवा जब पंखा झले
लाल सूरज निकले नया-सा
तुम लगते ज्यों कोई समोसा
टमाटर की चटनी में डूबा हो!
बादल, तुम भी क्या अजूबा हो!

सूरज जब ऊपर चढ़ आए
छोटे-छोटे हो जाएँ साए
फैली हो दोपहर अलसाई
तुम भी लेते हो जम्हाई
जैसे मन उड़-उड़कर ऊबा हो!
बादल, तुम भी क्या अजूबा हो!

गिर जाए जब सूरज नीचे
छुप जाए पहाड़ों के पीछे
हर तरफ घना अँधेरा छाए
तुम्हारा तन तो चमका जाए
जैसे चाँद बनने का मंसूबा हो!
बादल, तुम भी क्या अजूबा हो!

● राजीव सभरवाल

● चित्र : विवेक

(जुलाई ८६)

नटखट सरदी

काट चिकोटी गई बदन में
सिहरन-सी भर दी।
आई कोट पहन कुहरे का
नटखट सरदी।

हवा बर्फ के गोले मारे
सूरज भी हारा।
गया शून्य के नीचे
थर्मामीटर का पारा।

कम्बल, शाल, रज़ाई की
नाकों में दम भर दी।

रात ताड़ सी लम्बी, ठंडी
दिन बित्ते भर का।
सिकुड़े-सिकुड़े सभी
हाल ये जाड़े के डर का।

फूलों के चेहरों पर छाई
है सफ़ेद, ज़रदी।

● शिवचरण चौहान

● चित्र : मुश्ताक

(दिसंबर ८5)
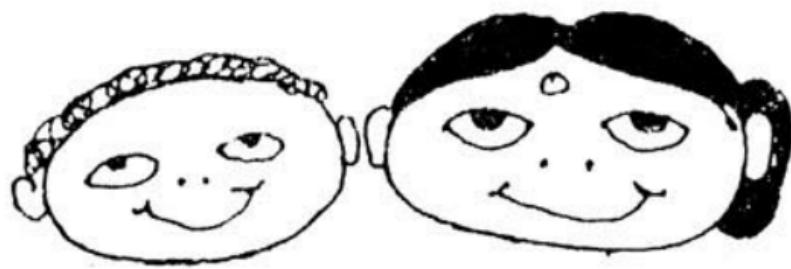
क्यों गुदगुदी हमें हँसाती

बतला ना बतला ना अम्मा
आज नहीं तू गुस्सा होना
कहाँ हँसी छिपकर रहती है,
कहाँ छिपा रहता है रोना?

समझा ना समझा ना अम्मा
क्यों गुदगुदी हमें हँसाती?
और मार चाँटे की अम्मा
कैसे हमको बता रुलाती?

हँसी गुदगुदी में होती है
या अम्मा हममें ही रहती?
और रुलाई चाँटे में या
माँ हममें ही छिपकर रहती?

कहाँ सवाल छिपे रहते हैं
और जवाब कहाँ से आते?
कुछ सवाल तो तुझको भी माँ
कितना कितना हैं चकराते?

पर सवाल क्यों मेरे मन में
उभर उभर कर आ जाते हैं?
क्यों जवाब पर तेरे मन को
अम्मा सूझ-सूझ जाते हैं?

● दिविक रमेश
● चित्र : अक्षत चराटे

(मई 94)

गीत छुट्टी का

एक, दो, तीन, चार
छुट्टी हो गई यार
मई-जून में डटकर खेलें
दिन ये बेफिक्री के!
हुई परीक्षा खत्म कि
दिन अब आए हैं कुल्फी के!!

पाँच, छै, सात
खाएँ दूध-दही से भात
सारी रद्दी बेच, खोंचकर
दही बड़े बनवाएँ!
जिन्हें कहीं पिकनिक पर लेकर,
खा-खाकर मस्ताएँ!!

आठ, नौ, दस
पड़ती खूब उमस
लाओ संतरे खाओ जल्दी,
या लस्सी बनवाओ!
अथवा गन्ने का रस
झट से दो गिलास पिलवाओ!!

● प्रेमशंकर रघुवंशी
● चित्र : राममिलन रजक

(जून 94)
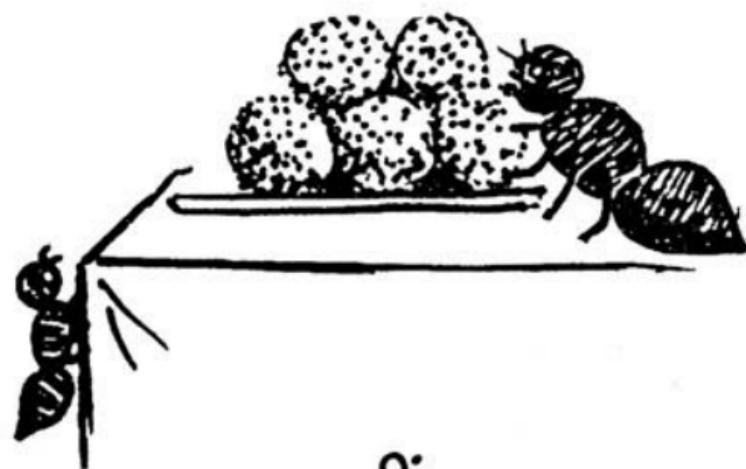
चींटा

रंग भूरा-काला
छह पैरों वाला
दिखती है देह
तीन मोतियों की माला।

सूँड़ दो हिलाता
दौड़ा आ जाता
चीनी-मिष्ठानों की
गंध ज्यों ही पाता।

ज्यों ही छेड़ोगे
पकड़ने बढ़ोगे
काटेगा छन-से वह
तुरन्त रो पड़ोगे।

जब भी थक जाता
बिल में सुस्ताता
चींटी का चींटे से
सगे का नाता।

● भगवती प्रसाद द्विवेदी
● चित्र : सुचिता पवार

ओस

कितनी प्यारी-प्यारी ओस,
चलकर आई कितने कोस।

मोती जैसी चमक रही है,
हीरे जैसी दमक रही है।
अगर छू लिया, होगी पानी,
करना मत ऐसी नादानी।

किरण-सहेली आएगी,
हाथ पकड़ ले जाएगी।
खेलेंगी ये हाथा-ताली,
ओस कहीं छिप जाएगी।

किरणें पकड़ न पाएँगी,
बस, इतना ही अफसोस।

● भगवती लाल व्यास

(फरवरी 91)

● चित्र : हिमांशु

नई सवारी

बिन इंजन
बिन पहिए की
सीधी-सादी प्यारी
धोबी के घर से ले आए
हम भी नई सवारी!

कितना महँगा है पेट्रोल
बड़े-बड़ों के बिस्तर गोल
लेकिन हरी घास से चलता
मेरा वाहन गोल-मटोल
सस्ती कीमत में मिलता है
ले लो नकद-उधारी!

कान पकड़कर कहीं घुमा दो
आगे-पीछे कहीं चला दो
अगर कहीं रुक जाए तो,
पानी देकर, घास खिला दो
धक्का खाने की ना इसको
लगे कभी बीमारी!

पूँछ खिंचे तो 'हार्न' बजाए
'चीं-पों, चीं-पों', का स्वर आए
कभी सवारी कर लें इस पर,
कभी माल वाहक बन जाए
मोटर, बस, स्कूटर वाले
देखें 'शान' हमारी!

● डॉ. हरीश निगम
● चित्र : रजनी

(अक्तूबर 91)

दादी-दादा

एक हमारे दादा जी हैं
एक हमारी दादी
दोनों ही पहना करते हैं
बिल्कुल भूरी खादी

दादी गाया करतीं
दादा जी मुस्काते
कभी-कभी दादा जी भी हैं
कोई गाना गाते।

● डॉ. श्रीप्रसाद
● चित्र : धनंजय

(दिसम्बर 99)

ISBN : 81-87171-30-8

मूल्यः 5.00 रुपए